17 अक्टूबर 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 33, अंक : 14 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (द्वितीय), 2010 सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन बापूनगर में आयोजित तेरहवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन रविवार, दिनांक 10 अक्टूबर को श्री प्रकाशचंदजी सेठी, जयपुर के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली ने की। मुख्य-अतिथि के रूप में श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री मुकेशजी जैन ढाई द्वीप इन्दौर, श्री अर्पितजी जैन, श्रुति जैन, स्वाति जैन अरिहंत केपिटल इन्दौर, श्री सुमनभाई दोशी राजकोट एवं विशिष्ट-अतिथि के रूप में श्री आदीशजी जैन दिल्ली, श्री पृथ्वीचंदजी जैन दिल्ली, श्री अभयकरणजी सेठिया सरदारशहर, श्रीमती मुन्नीबाई ध.प. श्री राजकुमारजी सेठी जयपुर, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री वज्रसेनजी जैन दिल्ली, श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री गंभीरमल प्रकाशचंदजी जैन सेमारीवाले अहमदाबाद, श्री सनतकुमारजी जैन भोपाल एवं श्री प्रकाशचन्दजी जैन भोपाल मंचासीन थे।

विद्वानों के अन्तर्गत तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के साथ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका भी मंचासीन थे।

इस अवसर पर ब्र.यशपालजी जैन ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया ।

ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में तत्त्वप्रचार की गतिविधियों का श्रेय गुरुदेवश्री के बाद डॉ.भारिल्ल को ही जाता है। उन्होंने सभी मुमुक्षु संस्थाओं से एक होकर जिनवाणी को अनेक भाषाओं में विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाने की अपील की।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्थापना से लेकर आजतक चल रही गतिविधियों का उद्देश्य एकमात्र तत्त्वप्रचार ही बताया, साथ ही ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष स्व. श्री पूरणचंदजी गोदिका के समर्पण एवं महामंत्री स्व.श्री नेमीचंदजी पाटनी की सेवाओं का स्मरण दिलाते हुये संस्था की रीति-नीति से जनसामान्य को अवगत कराया।

इस अवसर पर मुकेशजी जैन इन्दौर, श्री पी.सी.सेठी जयपुर, ताराचन्दजी सौगानी जयपुर, अजितप्रसादजी दिल्ली ने भी सभा को संबोधित किया।

सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री ताराचन्दजी सोगानी परिवार के कर कमलों से हुआ। प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन ने एवं मंच उद्घाटन श्रीमती सुशीला शांतिलालजी (अलवरवाले) जयपुर ने किया।

संचालन पं.शांतिकुमारजी पाटील ने तथा मंगलाचरण श्री गौरवजी सोगानी जयपुर ने किया। आभार प्रदर्शन पं. पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

दशलक्षण महापर्व सानन्द सम्पन्न

अहमदाबाद-वस्त्रापुर : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर एवं सायंकाल मोक्षमार्ग प्रकाशक व दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण विधान का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित रत्नेशजी शास्त्री हिम्मतनगर का सहयोग रहा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन श्री चिरेनभाई शाह व श्रद्धा जैन ने कराया।

मुम्बई-भायंदर : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा द्वारा प्रात: प्रवचनसार की गाथा 173-178, दोपहर में मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं सायंकाल ग्रन्थाधिराज समयसार के संवर अधिकार की गाथा 181-185 के आधार से प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।**- किरीटभाई सी.गांधी**

कारंजा (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर ब्र. हेमचंदजी 'हेम' द्वारा प्रात: प्रवचनसार की गाथा 1 से 33 के आधार पर, दोपहर में विभिन्न विषयों पर तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। तीन दिनों तक महावीर ब्रह्मचर्याश्रम में भी प्रवचनों का आयोजन किया गया। अन्तिम दिन बच्चों के उद्देश्य से सन्मति भवन में 'विज्ञान एवं अध्यात्म का सम्बन्ध' विषय पर बहुत रोचक एवं सरल भाषा में व्याख्यान हुआ, जिसको सभी बच्चों ने रुचिपूर्वक सुना। रात्रि में दो दिनों तक वहाँ के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ पण्डित संजयजी सेठी जयपुर द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशलक्षण धर्म पर सरल सुबोध शैली में प्रवचन हुये। पण्डितजी द्वारा शांतिनाथ जिनालय एवं कोलारस बड़ा मंदिर में भी व्याख्यान हुआ। आपके माध्यम से युवा वर्ग में धार्मिक संस्कार जागृत हुये। आपने अ.भा.जैन युवा फैडरेशन की बैठक ली, जिसमें फैडरेशन की गतिविधियां संचालित करने हेतु अनेक प्रकार के उपयोगी सुझाव दिये।

विदिशा-स्टेशन रोड़ (म.प्र.) : यहाँ श्री शांतिनाथ दि.जैन सीमंधर जिनालय स्टेशन मंदिर में प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् डॉ.आर.के. जैन विदिशा द्वारा समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार की गाथा 69 पर मार्मिक प्रवचन हुये। दिनाँक 23 सितम्बर को पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर के भी एक प्रवचन का लाभ मिला। **(शेष पृष्ठ 4 पर...)**

सम्पादकीय – 44

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ६८

विगत गाथा ६७ में कहा गया है कि जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय अन्योन्य ग्रहण द्वारा परस्पर बद्ध हैं, जब वे परस्पर पृथक् होते हैं तब उदय पाकर खिर जाने वाले पुद्गल आत्मा के सुख दुःख में निमित्त होते हैं।

अब गाथा ६८ कहते हैं जो इसप्रकार है –

तम्हा कम्मं कत्ता भावेण हि संजुदोध जीवस्स।
भोत्ता हु हवदि जीवो चेदगभावेण कम्मफलं ।।६८।।

(हरिगीत)

चेतन करम युत है अतः करता–करम व्यवहार से।
जीव भोगे करमफल नित चैत्य–चेतक भाव से ।।६८।।

आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि जीव के भाव से युक्त द्रव्यकर्म निश्चय से अपने भाव का कर्त्ता है और व्यवहार से वह जीवभाव का कर्त्ता है; परन्तु वह भोक्ता नहीं है। चेतनभाव के कारण कर्मफल का भोक्ता तो मात्र जीव है।

आचार्यश्री अमृतचन्द्रदेव कहते हैं कि यह कर्तृत्व और भोक्तृत्व की व्याख्या का उपसंहार है। इसलिए ऐसा निश्चित हुआ कि कर्म निश्चय से अपना कर्त्ता है और व्यवहार से जीवभाव का कर्त्ता है; जीव भी निश्चय से अपने भाव का कर्त्ता है और व्यवहार से कर्म का कर्त्ता है, पर भोक्ता तो वह किसी का भी नहीं है; क्योंकि जो अनुभूति चैतन्यपूर्वक हो, उसी को यहाँ भोक्तृत्व कहा है। यहाँ चैतन्यपूर्वक अनुभूति का सद्भाव नहीं है। इसलिए चेतनपने के कारण मात्र जीव ही कर्मफल का भोक्ता है।

कवि हीरानन्दजी इसी भाव को काव्य की भाषा में कहते हैं –

(दोहा)

कर्म करै निजभाव कौं, जीव भावकौं सोइ।
भुगता एकै जीव है, भाव–करमफल दोइ ।।३१९।।

(सवैया इकतीसा)

जैसैं दर्व कर्म करै निहचैं सुभाव आप,
विवहारनय देखैं परभाव कर्त्ता है।
जैसैं जीव करै निजभाव कौं निहचै रूप,
विवहारनय सोई परभाव धर्त्ता है।।
जैसैं दौनों नयौं करि जीव भोगता कहावै,
दुःखसुख भाव और इष्टानिष्ट–भर्त्ता है।
तैसें भोगी कर्म नाहिं चेतना अभाव तातैं,
ग्यानी ग्यान भाव भावै राग–दोष हर्त्ता है।। ३२०।।

(दोहा)

सुख दुःख दीसै भोगता, सुख–दुःख रूप न जीव।
सुख – दुःख जाननहार है ग्यान सुधारस पीव।।३२१।।

निश्चय से द्रव्यकर्म निजभाव कर्त्ता है और व्यवहार से जीव परभाव का कर्त्ता भी है तथा भोक्ता एक मात्र जीव ही है, कर्म चेतना के अभाव के कारण भोक्ता नहीं, ज्ञानी ज्ञान भाव के कारण राग–द्वेष का हर्त्ता है।

इसी बात को गुरुदेवश्री कानजी स्वामी इस प्रकार कहते हैं कि वस्तुतः द्रव्यकर्म अपने परिणामों अर्थात् ज्ञानावरणादि परिणामों के उपादान कर्त्ता हैं तथा व्यवहार से जीव के राग–द्वेषादि भाव कर्त्ता कहे जाते हैं।

इसीप्रकार जीव द्रव्य अपने अशुद्ध चेतनात्मक भावों का उपादान रूप से कर्त्ता है, ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्म को अशुद्ध चेतनात्मक भाव निमित्तभूत हैं। इस कारण व्यवहार से जीव द्रव्यकर्म का भी कर्त्ता है।

जीव अपने अशुद्ध परिणामों का कर्त्ता है, द्रव्य कर्मों का कर्त्ता नहीं; परन्तु जो नवीन कर्म स्वयं के कारण बंधते हैं। उसमें जीव के विकारी परिणाम निमित्त होते हैं। इस कारण जीव द्रव्य कर्मों का कर्त्ता व्यवहार से कहा जाता है।

तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार जीव अथवा कर्म निश्चय–व्यवहार नयों से एक दूसरे के परस्पर कर्त्ता हैं उसीप्रकार दोनों भोक्ता नहीं है। निश्चय से जीव अपने परिणामों का कर्त्ता है, व्यवहार से जीव जड़ कर्मों का कर्त्ता है। निश्चय से परमाणु अपने ज्ञानावरणादि पर्यायों का कर्त्ता है, व्यवहार से राग–द्वेष का कर्त्ता है। इसप्रकार कर्त्ता में जीव व कर्म – दोनों में परस्पर निश्चय व व्यवहार लागू पड़ता है। परन्तु इसी प्रकार भोक्तापन में दोनों परस्पर लागू नहीं पड़ते; क्योंकि भोक्तापन अर्थात् हर्ष–शोक का परिणाम अकेले जीवद्रव्य में होता है तथा वह स्वयं चैतन्यस्वरूप है। पुद्गल अचेतन है, उसमें सुख–दुःख के वेदन का गुण नहीं है। इसकारण पुद्गल द्रव्य निश्चय या व्यवहार से भोक्ता नहीं है। ●

शिवपुरी शाखा की बैठक आयोजित

शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण पर्व के अवसर पर पण्डित संजयजी सेठी जयपुर के मुख्य आतिथ्य में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन की बैठक आयोजित हुई। बैठक में पण्डितजी ने बहुत मार्मिक और उपयोगी सुझाव दिये, जिसमें उन्होंने किसी विद्वान के सानिध्य में प्रतिमाह बैठक का आयोजन, प्रतिमाह किसी भी जिनालय में पूजन–विधान का आयोजन एवं गोष्ठियां करने के साथ ही फैडरेशन की सदस्यता बढाने के सुझाव दिये।

सभी सुझावों को फैडरेशन की कार्यकारिणी द्वारा पूर्णतया क्रियान्वित करने का निर्णय लिया गया तथा ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के सानिध्य में एक धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित करने का भी निर्णय लिया गया।

शिवपुरी शाखा का गठन गतवर्ष अक्टूबर में किया गया था, जिसमें लगभग 20 सदस्यों ने सदस्यता ग्रहण की थी।– **अवधेश जैन, दिनेश जैन**

कार्यकारिणी पुनर्गठित

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ श्री शीतलनाथ जैन बड़ा मंदिर में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन की स्थानीय इकाई व नई कार्यकारिणी की घोषणा सुधा चौधरी तथा पूर्व अध्यक्ष डॉ. प्रकाशजी जैन ने की।

अध्यक्ष श्री चिन्मयजी बड़कुल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ.मक्खनलालजी जैन, उपाध्यक्ष श्री अविरलजी शास्त्री व डॉ.विकासजी जैन, मंत्री श्री चिंतनकुमारजी जैन, सहमंत्री डॉ. महेन्द्रजी जैन, सांस्कृतिक मंत्री श्री प्रदीपजी जैन पारस व श्री मनीषजी जैन, प्रचार मंत्री श्री महेन्द्रजी तारण व श्री शरदजी जैन, कोषाध्यक्ष श्री सत्येन्द्रजी लश्करी चुने गये हैं।

कार्यकारिणी सदस्यों में सर्वश्री अध्यात्म प्रकाशजी जैन, राहुलजी जैन, ऋषभजी जैन, पवनजी जैन, संतोषजी जैन, आलोकजी जैन, प्रदीपजी जैन, अनुरागजी जैन, नीलेशजी जैन, पंकजजी जैन, अजयजी जैन, संदेशजी जैन, राजीवजी जैन एवं अनुरागजी जैन का मनोनयन किया गया ।

फैडरेशन के संरक्षक श्री मलूकचंदजी जैन, श्री रविप्रकाशजी पटेल, श्री चक्रवर्तीजी जैन, श्री दीपकजी सेठ, श्री प्रकाशजी सिंघई, श्री वीरेन्द्रजी जैन, श्री सुरेन्द्रजी जैन, श्री राकेशजी जैन, डॉ. संजयजी जैन, श्री आर.के.जैन एवं श्री सुरेशजी जैन एड. हैं।

हार्दिक बधाई !

डडूका–बांसवाड़ा (राज.) निवासी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गढी के उपप्रधानाचार्य श्री सुशीलकुमारजी जैन को शिक्षक दिवस 2010 पर दो अलग–अलग समारोह में दो स्वयंसेवी संगठनोंह्नलायन्स क्लब एवं भारत विकास परिषद् द्वारा सम्मानित किया गया।

लायन्स क्लब द्वारा लायन्स भवन बांसवाड़ा में एवं भारत विकास परिषद् द्वारा न्यू लुक गर्ल्स कॉलेज बांसवाड़ा के सभागार में आयोजित भव्य जिला स्तरीय समारोह में श्री सुशीलकुमार जैन को शैक्षिक सेमिनारों में सहभागिता तथा शैक्षिक अनुसंधानों में उत्कृष्ट कार्यों हेतु शॉल ओढाकर, प्रशस्ति–पत्र तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

जैनपथप्रदर्शक समिति की ओर से आपको हार्दिक बधाई !

शान्ति विधान संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ नेमीनाथ जैन कॉलोनी में दिनाँक 3 अक्टूबर को श्री दिगम्बर जैन बीसा नरसिंहपुरा तेरापंथ समाज द्वारा शांति विधान का आयोजन किया गया।

विधि–विधान के कार्य पण्डित सचिनजी शास्त्री ने कराये। कार्यक्रम के निदेशक अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ.महावीर जैन टोकर एवं फैडरेशन के राजस्थान प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर थे।

उदयपुर निवासी श्री लोकेशकुमारजी जैन पुत्र श्री सोहनलालजी जैन गुदणोत के नूतन गृह प्रवेश के अवसर पर डॉ. महावीरप्रसादजी टोकर के हस्ते 251/–रुपये जैनपथ प्रदर्शक हेतु प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

अ. भा. जैन युवा फैडरेशन की शाखायें –

अहिंसा अभियान संचालित करें

जयपुर (राज.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा वीर निर्वाण महोत्सव के पावन अवसर पर पटाखों से होनेवाली जन–धन की हानि के प्रति लोगों को जागरूक करने तथा अहिंसात्मक दीपावली मनाने हेतु श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई के सहयोग से 'सर्वोदय अहिंसा अभियान' चलाया जा रहा है।

आपसे अनुरोध है कि आप इसके अन्तर्गत पाठशाला/जिनमंदिर/स्वाध्याय सभा/विद्यालयों आदि में निम्न प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों का यथासंभव आयोजन करें –

निबंध प्रतियोगिता (पटाखे : आनंद या मुसीबत), कविता लेखन प्रतियोगिता (सच्ची दीपावली/दीपावली का उद्देश्य), टी शर्ट मेकिंग कॉम्पटीशन (हरित दीपावली/धार्मिक दीपावली/सच्ची दीपावली), पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता (पटाखों का भयावह रूप), भाषण प्रतियोगिता (आज का युवा दीपावली के स्वरूप से कितना परिचित है?), वाद–विवाद प्रतियोगिता (दीपावली पर आतिशबाजी की सार्थकता), लघुनाटक लेखन प्रतियोगिता एवं मंचन (सुरक्षित दीपावली), सेमिनार अथवा संगोष्ठी/समूह परिचर्चा (दीपावली एवं अहिंसा), हस्ताक्षर अभियान।

अपने मित्रों/परिचितों को अहिंसात्मक दीपावली मनाने की प्रेरणा ई–मेल, एस.एम.एस. आदि के माध्यम से अवश्य देवें। जैसे –

Make this Dipawali Lightfull, but Pollution FREE.

उक्त में से अनेक कार्यक्रम जयपुर शहर के विभिन्न विद्यालयों में आयोजित किये जा चुके हैं। अभियान की जानकारी, सामग्री एवं प्रतियोगिताओं के संबंध में आप इसके संयोजक श्री संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा से उनके मो.नं.9509232733 पर संपर्क कर सकते हैं।

– संजय शास्त्री (अहिंसा अभियान संयोजक)

नवीन कृति का विमोचन

उदयपुर (राज.) : यहाँ हिरण मगरी सेक्टर–3 में दशलक्षण पर्व के अंतिम दिन डॉ.महावीरप्रसादजी शास्त्री (प्रांतीय उपाध्यक्ष – अ.भा.जैन युवा फैडरेशन) द्वारा लिखित नवीन कृति 'आधुनिक बहू' का विमोचन श्री ख्यालीलालजी रोडावत एवं श्री दिलीपजी व दिनेशजी जैन ने किया। इस कृति का परिचय देते हुये श्री महावीरप्रसादजी ने कहा कि इस कृति में छोटी–छोटी दस एकांकियां हैं, जो उत्तम क्षमा से लेकर उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पर आधारित हैं। ये एकांकियां मंच पर बहुत सहजता से मात्र 5 मिनट में प्रस्तुत की जा सकती हैं। इस कृति का मूल्य मात्र–5/– रुपये रखा गया है।

इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें – डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, मो.नं.–09784402231 / 9413114801

(पृष्ठ 1 का शेष...)

पर्व के समापन के अवसर पर सकल जैन समाज द्वारा दिनाँक 22, 24 व 26 सितम्बर को तीन दिन विशाल जुलूस निकाला गया।

– चक्रवर्ती जैन एडवोकेट

देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार के कलश 136 पर, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की विवेचना एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण विधान श्री दीपकजी धवल भोपाल एवं पण्डित समकितजी जैन कोटा द्वारा संपन्न कराया गया। गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन पर पण्डित विरागजी शास्त्री विवेचन करते थे। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन श्री दीपकजी धवल, कु.प्रज्ञा जैन एवं कु.ज्ञप्ति जैन द्वारा कराया गया।

नागपुर (महा.) : यहाँ इतवारी स्थित श्री महावीर विद्यानिकेतन में पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड द्वारा प्रात: समयसार कलश 185 पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक व्याख्यान हुये। दोपहर में युवा फैडरेशन द्वारा पण्डित मुकेशजी कोठेदार, पण्डित सचिनजी मोदी खनियांधाना एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी के विधानाचार्यत्व में नियमसार विधान का आयोजन किया गया। सायंकाल विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रवचन का लाभ मिला एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

जबलपुर (मुमुक्षु मण्डल) : यहाँ पायलवाला मार्केट में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ के प्रात: नित्य–नियम पूजन के पश्चात् समयसार की प्रारंभिक गाथाओं पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में 47 शक्तियों पर कक्षा एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् दशलक्षण पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। विदुषी श्रुति जैन द्वारा सायंकाल बालकक्षा ली गई एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

दिल्ली (द्वारका) : यहाँ पण्डित अभिषेकजी शास्त्री द्वारा प्रात: सामूहिक पूजन का कार्यक्रम हुआ। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् दशधर्मों पर प्रवचन हुये। प्रवचन के पश्चात् प्रश्नमंच एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दिनाँक 23 सितम्बर को शांति–विधान का भी आयोजन किया गया।

करेली (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अशोकजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रात: प्रवचनसार की गाथा 80वीं पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त प्रात: पूजन–विधान, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रथम बार सकल जैन संघ का सामूहिक जुलूस निकाला गया, जिसमें करेली मुमुक्षु मण्डल ने अगवानी करते हुए वातावरण को आध्यात्मिक बना दिया। कार्यक्रमों की सफलता से उत्साहित होकर युवा फैडरेशन ने आगामी 25 दिसम्बर से 2 जनवरी तक करेली में आवासीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर आयोजित करने की घोषणा की। **– प्रवेश भारिल्ल**

बैतूल (म.प्र.) : यहाँ पण्डित प्रवेशजी भारिल्ल शास्त्री द्वारा प्रात: पूजन–विधान के पश्चात् रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन एवं बालकक्षा ली गयी। दोपहर में तारण–तरण चैत्यालय में भक्तामर स्तोत्र पर महिला–कक्षा ली गयी। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् दशलक्षण धर्म पर व्याख्यान हुये एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। चतुर्दशी के दिन दिगम्बर श्वेताम्बर जैन मंदिर में दैनिक वीतराग–विज्ञान पाठशाला का उद्घाटन किया गया। **– उत्तमचंद सरावगी**

भोपाल–कोहेफिजा (म.प्र.) : यहाँ पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री 1008 अतिशय क्षेत्र श्री चौबीसी जैन बड़ा मंदिर में पण्डित निर्मलकुमारजी जैन एडवोकेट एटा द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, दोपहर में समयसार व रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म के साथ–साथ विविध विषयों पर प्रवचन हुये।

– राजीव बंसल

अजमेर (राज.) : यहाँ सीमंधर जिनालय में पण्डित श्रेणिककुमारजी जैन जबलपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण विधान का आयोजन हुआ, जिसमें पण्डित मयंकजी शास्त्री जयपुर का विशेष सहयोग रहा। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। दिनाँक 24 सितम्बर को सामूहिक क्षमावणी का कार्यक्रम हुआ। सभी कार्यक्रमों में ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया का उचित मार्गदर्शन रहा। **– मनोज कासलीवाल**

अहमदाबाद – सरसपुर : यहाँ पण्डित आशीषजी शास्त्री सिलवानी द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

अहमदाबाद (मणिनगर) : यहाँ प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी.प्रवचन के उपरान्त पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई द्वारा प्रात: समयसार के निर्जरा अधिकार पर एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म व मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचन हुये। रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये एवं वाद विवाद प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी। **– डॉ. संजय जे. मेहता**

दिल्ली (सैनिक फार्म) : यहाँ विदुषी श्रुति जैन दिल्ली द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान की जयमाला पर एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण विधान का आयोजन हुआ एवं सायंकाल प्रथम बार बालकक्षा का आयोजन किया गया, जिसकी सभी लोगों ने बहुत प्रशंसा की।

रुड़की (उत्तरांचल) : यहाँ पण्डित विपुलकुमारजी मोदी द्वारा प्रात: दशलक्षण पूजन के पश्चात् मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचन, दोपहर में तत्त्वचर्चा एवं सायंकाल रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

मदनगंज–किशनगढ (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर विदुषी मुक्ति जैन द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। इनके साथ पधारीं विदुषी नयना जैन द्वारा दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र, सायंकाल बालकक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

अलवर (राज.) : यहाँ शिवाजी पार्क स्थित श्री संभवनाथ दि. जैन मंदिर में पण्डित प्रेमचंदजी शास्त्री अलवर द्वारा प्रात: सिद्धचक्र महामण्डल

विधान, दशलक्षण विधान एवं श्री संभवनाथ विधान संपन्न हुआ। रात्रि में डॉ. अरुणजी शास्त्री द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

उदयपुर (राज.) : यहाँ प्रभात नगर सेक्टर-5 में डॉ.महावीरप्रसादजी शास्त्री के प्रात: समयसार एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में भक्तामर पर कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। अनेक लोगों ने प्रतिदिन स्वाध्याय करने का संकल्प लिया। **– सुमतिप्रकाश वालावत**

उदयपुर (राज.) : यहाँ नेमिनाथ जैन कॉलोनी सेक्टर-3 में पण्डित सचिनजी शास्त्री बरेली द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, सायंकाल बालकक्षा एवं दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी लाभ मिला। **– सुरेश अखावत**

वल्लभनगर (राज.) : यहाँ पण्डित सुदीपजी शास्त्री घाटोल द्वारा प्रात: पूजन के उपरान्त बारह भावना पर एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

महिदपुर-उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ जैन मंदिर में पण्डित शांतिलालजी सोगानी द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, दोपहर में रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

बेलगांव (कर्नाटक) : यहाँ पण्डित अभिनवजी मोदी शास्त्री द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान एवं उसके बीच में समयसार के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार के आधार से प्रवचन हुये। दोपहर में क्रमबद्धपर्याय एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अधिकार पर प्रवचन हुये। इनके अतिरिक्त विदुषी धवलश्री पाटील बेलगांव द्वारा (कन्नड़ भाषा में) रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं पण्डित अललप्पा हादीमनी तेरदाल द्वारा समयसार पर (कन्नड़ भाषा में) प्रवचन हुये।

कोलारस (म.प्र.) : यहाँ पण्डित मिश्रीलालजी केकड़ी द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसूत्र, दोपहर में समयसार के संवर अधिकार एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। **– हेमेन्द्रकुमार जैन**

कुरावली (म.प्र.) : यहाँ पण्डित सिद्धार्थकुमारजी दोशी रतलाम द्वारा प्रात: समयसार की गाथा-49 एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। ध्रुवधाम से पधारे पण्डित नेमिचन्द्रजी द्वारा दोपहर में छहढाला की कक्षा तथा सायंकाल बालकक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

बड़ी सादड़ी (राज.) : यहाँ आदिनाथ दि.जैन मंदिर में वैद्य पूर्णचन्दजी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म व रत्नरण्डश्रावकाचार पर प्रवचन हुये। **ह्न विनोद जैन दिवाकर**

बड़नगर-उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अनिलकुमारजी पाटोदी द्वारा प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। अन्तिम दिन समाज द्वारा पण्डितजी को 'समाजरत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया। **– अशोककुमार शाह**

सागर (म.प्र.) : यहाँ सागर विश्वविद्यालय परिसर में स्थित आदिनाथ मानस्तम्भ जिनालय में पण्डित ऋषभजी शास्त्री ललितपुर द्वारा प्रात: दशलक्षण पूजन का कार्यक्रम रखा गया साथ ही सायंकाल द्रव्यानुयोग के अनेक विषयों पर तत्त्वचर्चा की गई।

विहिगांव (महा.) : यहाँ ध्रुवधाम से पधारे पण्डित प्रदीपकुमारजी धोतरे द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसूत्र, सायंकाल बालकक्षा एवं दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित अखिलेशजी शास्त्री बड़ामलहरा द्वारा प्रात: नित्यनियम पूजन के पश्चात् तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन, दोपहर में छहढाला की कक्षा, सायंकाल बालकक्षा एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

वनस्थली-निवाई (राज.) : यहाँ पण्डित विवेकजी शास्त्री द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा एवं बालकक्षा ली गयी। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत दशधर्म पर प्रवचन हुये। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

पीसांगन (राज.) : यहाँ पण्डित आराध्यजी टडैया जयपुर द्वारा प्रात: पूजन-विधान एवं दोनों समय प्रवचन किये गये। इनके साथ ही कोटा से पधारे पण्डित दिपांशुजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा सायंकाल बालकक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

कायमगंज-फरुखाबाद (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित विमलकुमारजी जैन एटा द्वारा प्रात: पूजन के उपरांत मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन, दोपहर में बालकक्षा एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

हरदा (म.प्र.) : यहाँ विदुषी कुसुमलताजी जैन द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् समयसार की गाथा 207-213 पर, दोपहर में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

वर्धा (महा.) : यहाँ विदुषी लताताई रोम अकोला द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशलक्षण धर्म पर सरल भाषा में प्रवचन हुये। **– सुदर्शनकुमार शाह**

ऋषभ शास्त्री ललितपुर को पीएच.डी.

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक श्री ऋषभकुमार जैन पुत्र श्री जयकुमारजी जैन ललितपुर को डॉ. ए.डी. शर्मा के निर्देशन में 'भारतीय दर्शन में सर्वज्ञता की ज्ञान मीमांसा : जैन बौद्ध एवं पूर्व मीमांसा के संदर्भ में' विषय पर हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर से पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई।

टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक समिति आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

62 सोलहवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

ये लोग ऐसा मानते हैं कि अकेले शुद्धात्मा के चिंतन से संवर–निर्जरा होते हैं व मुक्तात्मा के सुख का अंश प्रगट होता है; जीव के गुणस्थानादि अशुद्ध भावों का और अपने से भिन्न जीवादि तथा पुद्गलादि पदार्थों का चिन्तवन करने से आस्रव–बंध होता है। यही कारण है कि ये लोग आत्मा को छोड़कर अन्य विचारों से पराङ्मुख रहते हैं।

उक्त संदर्भ में पण्डितजी का कहना यह है कि चाहे निज शुद्धात्मा का चिन्तवन करो या अन्य पदार्थों का चिन्तवन करो; यदि वह चिन्तवन वीतरागभाव सहित है तो संवर–निर्जरा होते ही हैं और रागादिरूप भाव हों तो आस्रवबंध ही होता है।

उक्त बात की पुष्टि करते हुए पण्डितजी कहते हैं कि यदि परद्रव्य को जानने से ही आस्रव–बंध होते होते तो फिर केवली भगवान तो समस्त परद्रव्यों को जानते हैं; अत: उनके भी आस्रव–बंध होना चाहिए।

आगे की बात पण्डितजी के शब्दों में देखिये –

''फिर वह कहता है कि छद्मस्थ के तो परद्रव्य चिंतवन से आस्रव–बंध होता है ? सो भी नहीं है; क्योंकि शुक्लध्यान में भी मुनियों को छहों द्रव्यों के द्रव्य–गुण–पर्यायों का चिंतवन होने का निरूपण किया है और अवधि–मन:पर्यय आदि में परद्रव्य को जानने की ही विशेषता होती है। तथा चौथे गुणस्थान में कोई अपने स्वरूप का चिंतवन करता है और उसके भी आस्रव–बंध अधिक हैं तथा गुणश्रेणी निर्जरा नहीं है; पाँचवें–छठवें गुणस्थान में आहार–विहारादि क्रिया होने पर परद्रव्य चिंतवन से भी आस्रव–बंध थोड़ा है और गुणश्रेणी निर्जरा होती रहती है। इसलिए स्वद्रव्य–परद्रव्य के चिंतवन से निर्जरा–बंध नहीं होते, रागादि घटने से निर्जरा है और रागादि होने से बंध है। उसे रागादि के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान नहीं है, इसलिए अन्यथा मानता है।[१]''

जो लोग पर को जानने का निषेध करते हैं या फिर पर को जानने से बंध होता है – ऐसा मानते हैं; उन लोगों को पण्डित टोडरमलजी के उक्त कथन पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

प्रश्न : यदि ऐसा है तो निर्विकल्प अनुभवदशा में नय–प्रमाण–निक्षेपादिक के विकल्पों का निषेध क्यों किया गया है ?

उत्तर : जो जीव इन्हीं विकल्पों में उलझे रहते हैं और अभेदरूप एक आत्मा का अनुभव नहीं करते; उन्हें ऐसा उपदेश देते हैं कि ये सभी विकल्प वस्तुस्वरूप समझने के लिए तो उपयोगी हैं; किन्तु वस्तुस्वरूप समझ में आ जाने के उपरान्त इनका कुछ भी प्रयोजन नहीं रहता; इसलिए ही यह कहा है कि इनमें ही मत उलझे रहो, अपने भगवान आत्मा का निर्विकल्प अनुभव करो।

निर्विकल्प अनुभव के संदर्भ में भी बहुत भ्रांतियाँ प्रचलित हैं। उक्त संदर्भ में पण्डितजी का स्पष्टीकरण इसप्रकार है –

''तथा वस्तु का निश्चय होने के पश्चात् ऐसा नहीं है कि सामान्यरूप स्वद्रव्य ही का चिंतवन रहा करे। स्वद्रव्य का तथा परद्रव्य का सामान्यरूप और विशेषरूप जानना होता है, परन्तु वीतरागता सहित होता है; उसी का नाम निर्विकल्पदशा है।

वहाँ वह पूछता है – यहाँ तो बहुत विकल्प हुए, निर्विकल्प संज्ञा कैसे संभव है ?

उत्तर – निर्विचार होने का नाम निर्विकल्प नहीं है; क्योंकि छद्मस्थ के जानना विचार सहित है, उसका अभाव मानने से ज्ञान का अभाव होगा और तब जड़पना हुआ; सो आत्मा के होता नहीं है। इसलिए विचार तो रहता है।

तथा यह कहे कि एक सामान्य का ही विचार रहता है, विशेष का नहीं। तो सामान्य का विचार तो बहुत काल रहता नहीं है व विशेष की अपेक्षा बिना सामान्य का स्वरूप भासित नहीं होता।

तथा यह कहे कि अपना ही विचार रहता है, पर का नहीं; तो पर में परबुद्धि हुए बिना अपने में निजबुद्धि कैसे आये ?[१]''

अपनी बात स्पष्ट करते हुए वे अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं –

''राग–द्वेषवश किसी ज्ञेय को जानने में उपयोग लगाना और किसी ज्ञेय के ज्ञान से छुड़ाना – इसप्रकार बारम्बार उपयोग को भ्रमाना – उसका नाम विकल्प है।

तथा जहाँ वीतरागतारूप होकर जिसे जानते हैं, उसे यथार्थ जानते हैं, अन्य–अन्य ज्ञेय को जानने के अर्थ उपयोग को भ्रमाते नहीं हैं; वहाँ निर्विकल्पदशा जानना।[२]''

वस्तुत: बात यह है कि ज्ञान का स्वरूप ही विचारात्मक है, विकल्पात्मक है; क्योंकि शास्त्रों में दर्शन को निर्विकल्प (निराकार) और ज्ञान को सविकल्प (साकार) कहा गया है।

आत्मानुभव या ध्यान के प्रकरण में जब निर्विकल्पता की बात करते हैं, तब वह बात ज्ञान के सविकल्प स्वरूप के निषेधरूप नहीं होती, अपितु रागादि पूर्वक चित्त की अस्थिरता के निषेध के अर्थ में होती है।

आचार्य उमास्वामी कृत महाशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र की आचार्य पूज्यपाद कृत सर्वार्थसिद्धि नामक टीका का आधार प्रस्तुत करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''यदि सर्व चिन्ता रुकने का नाम ध्यान हो तो अचेतनपना आ जाये। तथा ऐसी भी विवक्षा है कि सन्तान अपेक्षा नाना ज्ञेयों का भी जानना होता है; परन्तु जबतक वीतरागता रहे, रागादि से आप उपयोग को न भ्रमाये, तबतक निर्विकल्पदशा कहते हैं।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २०९–२१०

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २१० २. वही, पृष्ठ २११

फिर वह कहता है – ऐसा है तो परद्रव्य से छुड़ाकर स्वरूप में उपयोग लगाने का उपदेश किसलिए दिया है ?

समाधान – जो शुभ–अशुभभावों के कारण परद्रव्य हैं; उनमें उपयोग लगाने से जिनको राग–द्वेष हो आते हैं, और स्वरूप चिंतवन करें तो जिनके राग–द्वेष घटते हैं – ऐसे निचली अवस्थावाले जीवों को पूर्वोक्त उपदेश है।

जैसे – कोई स्त्री विकारभाव से पराये घर जाती थी; उसे मना किया कि पराये घर मत जा, घर में बैठी रह। तथा जो स्त्री निर्विकार भाव से किसी के घर जाकर यथायोग्य प्रवर्ते तो कुछ दोष है नहीं।

उसीप्रकार उपयोगरूप परिणति राग–द्वेषभाव से परद्रव्यों में प्रवर्तती थी; उसे मना किया कि परद्रव्यों में प्रवर्तन मत कर, स्वरूप में मग्न रह। तथा जो उपयोगरूप परिणति वीतरागभाव से परद्रव्य को जानकर यथायोग्य प्रवर्ते तो कुछ दोष है नहीं।

फिर वह कहता है – ऐसा है तो महामुनि परिग्रहादिक चिंतवन का त्याग किसलिए करते हैं ?

समाधान – जैसे विकाररहित स्त्री कुशील के कारण पराये घरों का त्याग करती है; उसीप्रकार वीतराग परिणति राग–द्वेष के कारण परद्रव्यों का त्याग करती है। तथा जो व्यभिचार के कारण नहीं हैं ऐसे पराये घरों में जाने का त्याग है नहीं; उसीप्रकार जो राग–द्वेष के कारण नहीं हैं ऐसे परद्रव्यों को जानने का त्याग है नहीं।

फिर वह कहता है – जैसे जो स्त्री प्रयोजन जानकर पितादिक के घर जाती है तो जाये, बिना प्रयोजन जिस–तिसके घर जाना तो योग्य नहीं है। उसीप्रकार परिणति को प्रयोजन जानकर सात तत्त्वों का विचार करना, बिना प्रयोजन गुणस्थानादिक का विचार करना योग्य नहीं है ?

समाधान – जैसे स्त्री प्रयोजन जानकर पितादिक या मित्रादिक के भी घर जाये; उसीप्रकार परिणति तत्त्वों के विशेष जानने के कारण गुणस्थानादिक व कर्मादिक को भी जाने।

तथा यहाँ ऐसा जानना कि जैसे शीलवती स्त्री उद्यमपूर्वक तो विट पुरुषों के स्थान पर न जाये; यदि परवश वहाँ जाना बन जाये और वहाँ कुशील सेवन न करे तो स्त्री शीलवती ही है।

उसीप्रकार वीतराग परिणति उपायपूर्वक तो रागादिक के कारण परद्रव्यों में न लगे; यदि स्वयमेव उनका जानना हो जाये और वहाँ रागादिक न करे तो परिणति शुद्ध ही है।

इसलिए मुनियों को स्त्री आदि के परीषह होने पर उनको जानते ही नहीं, अपने स्वरूप का ही जानना रहता है – ऐसा मानना मिथ्या है।

उनको जानते तो हैं, परन्तु रागादिक नहीं करते।

इसप्रकार परद्रव्य को जानते हुए भी वीतरागभाव होता है – ऐसा श्रद्धान करना।[१]''

पण्डित टोडरमलजी के उक्त सम्पूर्ण कथन का गहराई से अध्ययन करें तो एक बात हाथ पर रखे आंवले के समान स्पष्ट होती है कि चिन्तवन रुकने का नाम ध्यान नहीं है, अनेक प्रकार के ज्ञेयों का जानना रुकने का नाम भी ध्यान नहीं है; क्योंकि ध्यान में अनेक ज्ञेयों का जानना भी होता रहता है और चिन्तवन भी चलता रहता है। उक्त दोनों स्थितियों में भी **यदि वीतरागता खण्डित नहीं होती है और रागादि के कारण उपयोग को नहीं भ्रमाया जाता है तो निर्विकल्पदशा बनी रहती है।**

जब यह बात कही जाती है तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि यदि ऐसा है तो फिर ऐसा उपदेश क्यों दिया जाता है कि उपयोग को परद्रव्य से हटाकर स्वद्रव्य में लगावो।

यह उपदेश तो उन लोगों को ही दिया जाता है, जिन लोगों की ऐसी स्थिति है कि जिसको देखे-जाने, उसी से राग-द्वेष करने लगते हैं।

उक्त तथ्य के स्पष्टीकरण के लिए पण्डितजी महिला का उदाहरण देते हैं और उक्त उदाहरण के माध्यम से उक्त तथ्य को विविध कोणों से विस्तार से स्पष्ट करते हैं।

यदि कोई महिला विकारभाव से पराये घर जाती है तो उसे रोका जाता है; किन्तु यदि कोई महिला निर्विकारभाव से पर घर जावे और वहाँ यथायोग्य व्यवहार करे तो उसे कोई नहीं रोकता।

उसीप्रकार जब किसी व्यक्ति का उपयोग राग–द्वेषभाव से परद्रव्यों में जाता है, तब उससे कहते हैं कि अपने उपयोग को परद्रव्य से हटाकर स्वद्रव्य में लगावो।

यदि कोई व्यक्ति वीतरागभाव से परद्रव्य को जानकर यथायोग्य प्रवर्तन करता है तो जिनागम में उसे परद्रव्य को जानने से नहीं रोका जाता।

निश्चयाभासी जीव की यह मान्यता इतनी दृढ है कि अनेकप्रकार से समझाये जाने पर भी वह छूटती नहीं है। अत: वह अपनी बात के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करता हुआ कहता है कि यदि ऐसा है तो फिर मुनिराज परिग्रहादिक के चिन्तवन का त्याग क्यों करते हैं ?

उक्त प्रश्न का उत्तर देते हुए पण्डितजी उसी महिला का उदाहरण देते हुए समझाते हैं कि जिसप्रकार विकार रहित महिला कुशील के कारणरूप पराये घरों का त्याग करती है; उसीप्रकार मुनिराज भी राग–द्वेषोत्पादक परद्रव्यों का त्याग करते हैं।

किन्तु वही विकार रहित महिला; जो व्यभिचार के कारण नही है, उन घरों में जाने का त्याग नहीं करती; उसीप्रकार मुनिराज, जो परद्रव्य राग–द्वेष के कारण नहीं हैं; उन परद्रव्यों को जानने का त्याग नहीं करते।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २११–२१२ **(क्रमश:)**

17 अक्टूबर 2010, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

पाठकों के पत्र -

ब्र. यशपालजी जैन जयपुर कृत **मोक्षमार्ग की पूर्णता** पढकर बेलगांव (कर्नाटक) से श्री एम.डी.कोकिले लिखते हैं कि - 'मोक्षमार्ग की पूर्णता पढकर हमें बहुत खुशी हुई, अति आनन्द हुआ। साहित्य प्रकाशन के संबंध में टोडरमल स्मारक का कार्य प्रशंसनीय है। रत्नत्रय प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ कैसा करना - यह विषय मोक्षमार्ग की पूर्णता में अत्यंत सुलभ रीति से बताया है। प्रश्नोत्तर पद्धति भी हमें बहुत अच्छी लगी। अनेक ग्रन्थों के उद्धरण भी आपने दिये, यह विषय भी बहुत अच्छा लगा। छपाई आदि भी अच्छी है।'

भारिल्लद्वय की पुस्तकें पाठ्यक्रम में सम्मिलित

उदयपुर (राज.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के राजस्थान प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री के अथक् प्रयासों से अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित **ध्यान का स्वरूप** एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित **सामान्य श्रावकाचार** पुस्तक को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के एम.ए. (फाइनल) के जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य विषय के तृतीय प्रश्नपत्र (75 अंक) में सम्मिलित किया गया है। इस कार्य में प्राकृत विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एच.सी.जैन का विशेष सहयोग रहा।

ज्ञातव्य है कि पूर्व में भी सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के पीएच.डी. कोर्स वर्क में डॉ. भारिल्ल की **परमभावप्रकाशक नयचक्र** एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की **इन भावों का फल क्या होगा** पुस्तकें सम्मिलित हो चुकी हैं।

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के अवसर पर डॉ.महावीरप्रसादजी शास्त्री (प्रांतीय उपाध्यक्ष - युवा फैडरेशन एवं प्राध्यापक - राजकीय फतह उच्च माध्यमिक विद्यालय उदयपुर) को नारायण सेवा संस्थान (ट्रस्ट) उदयपुर एवं सेवा परमो धर्म (ट्रस्ट) द्वारा राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया गया।

आपको यह सम्मान शिक्षा के क्षेत्र में किये गये आपके विशिष्ट योगदान के लिये प्रदान किया गया है।

आपको टोडरमल महाविद्यालय जयपुर एवं जैनपथप्रदर्शक की ओर से हार्दिक शुभकामनायें !

शोक समाचार

1. सोनगढ (गुज.) निवासी श्री हीराभाई जी शाह पुत्र श्री भीखाभाईजी शाह का दिनाँक 17 सितम्बर को 85 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप गहन स्वाध्यायी मुमुक्षु थे।

2. सोनगढ ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री चिमनलाल ठाकरसी मोदी का दिनाँक 6 अक्टूबर की रात्रि को शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी मुमुक्षु एवं गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त थे।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है। **ह्न सह सम्पादक**

नवीन प्रकाशन

लब्धिसार और क्षपणासार पर आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कृत टीका सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका का हिन्दी अनुवाद डॉ.उज्ज्वला शहा ने किया है। शास्त्र प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्ति 125/- रुपये (डाकखर्च सहित) निम्न पते पर भेजें ह्न

पण्डित दिनेशभाई शहा, 157/9 निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई - 400022, फोन-(022) 24073581

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 नवम्बर	मंगलायतन-विश्वविद्या.	दीक्षान्त समारोह
4 से 7 नवम्बर	देवलाली	दीपावली
14 व 15 नवम्बर	हेरले (महा.)	जिनमंदिर शिलान्यास
18 से 21 नवम्बर	दिल्ली	अष्टाह्निका महापर्व
17 से 23 दिसम्बर	मंगलायतन	पंचकल्याणक
25 से 31 दिसम्बर	इन्दौर(मालवा)	फैडरेशन यात्रा
2 से 4 जनवरी	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा
15 से 20 जनवरी	उदयपुर	पंचकल्याणक

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127